बीएमजे ग्लोबल हेल्थ में हाल ही में प्रकाशित लेख के लिए प्रेस विज्ञप्ति

शीर्षक	भारतीय पुरुषों में शराब तथा विभिन्न प्रकार के मादक पेयों के सेवन का बक्कल म्यूकोसा कैंसर के जोखिम से संबंध: एक बहु-केंद्रित केस-कंट्रोल अध्ययन Doi: 10.1136/bmjgh-2024-017392
संस्था	सेंटर फॉर कॅन्सर एपिडेमियोलॉजी, ॲक्ट्रेक, टीएमसी.
वित्तपोषक	डिपार्टमेंट ऑफ हेल्थ रिसर्च
प्रमुख लेखक	ग्रेस जोर्ज
वरिष्ठ लेखक	डॉ. पंकज चतुर्वेदी, इसाबेल सोरजोमातरम, अनिल चतुर्वेदी और राजेश दीक्षित
अनुरूपी वरिष्ठ लेखक	डॉ. शरयू म्हात्रे, सीसीई, टीएमसी
विभाग की वेबसाइट	https://tmcepi.gov.in/MolecularEpidemiologyAndPopulationGenomics/
QR code of the division website	
Link for full research article	Doi: 10.1136/bmjgh-2024-017392

एम्बार्गो समाप्त होने का समय है: मंगलवार, २३ दिसंबर, रात २३:३० बजे (यूके, जीएमटी)

किसी भी अतिरिक्त प्रश्नों के लिए संपर्क करें:

डॉ. शरयू म्हात्रे: mhatresharayu@gmail.com; smhatre@actrec.gov.in

Mobile: 9820958946

डॉ. राजेश दीक्षित: dixr24@hotmail.com; director.cce@actrec.gov.in

Mobile: 9969518844

डॉ. पंकज चतुर्वेदी: pankaj.chaturvedi@actrec.gov.in

प्रेस विज्ञप्ति की कार्यसूची

दिनांक: २४.१२.२०२५ समय: सुबह ११:३० बजे – दोपहर १:३० बजे

स्थान: ७वीं मंज़िल, सेमिनार कक्ष, आरआरयू भवन, ॲक्ट्रेक, खारघर, नवी मुंबई

पंजीकरण एवं किट का वितरण (प्रेस विज्ञप्ति, शोध पत्र की प्रति, उद्धरण)

१. स्वागत: कैज़र भारमल

२. जानकारीपूर्ण वीडियो: सीसीई और ॲक्ट्रेक

३. कैंसर के कारणों में शराब की भूमिका: डॉ. सुदीप गुप्ता

४. वर्तमान निष्कर्षों की प्रस्तुति:

- भारत में मुख कैंसर, अध्ययन की कार्यप्रणाली एवं अध्ययन से प्राप्त साक्ष्य: ग्रेस जॉर्ज
- निष्कर्षों का महत्व: शरयू म्हात्रे
- कार्रवाई का आह्वान: राजेश दीक्षित

८. भारत में शराब नियंत्रण: शराब नियंत्रण नीतियों को सुदृढ़ करने की आवश्यकता: डॉ. पंकज चतुर्वेदी

९. प्रश्न एवं उत्तर (डॉ. एस. गुप्ता, पी. चतुर्वेदी, डॉ. आर. दीक्षित, डॉ. जी. मिश्रा, डॉ. एस. म्हात्रे, ग्रेस जॉर्ज)

१०. धन्यवाद ज्ञापन

प्रेस नोट

अंतरराष्ट्रीय तथा स्थानीय मादक पेयों का नियमित रूप से कम मात्रा में सेवन भी मुख गुहा कैंसर के जोखिम को बढ़ाता है।

टाटा मेमोरियल सेंटर से आया नया बड़ा अध्ययन महत्वपूर्ण जानकारियाँ उजागर करता है

मुंबई, भारत — [२४.१२.२०२५]

मुंबई स्थित टाटा मेमोरियल सेंटर के अंतर्गत कैंसर महामारी विज्ञान केंद्र **(**सी.सी.इ.**),** ऍक्ट्रेक द्वारा किए गए एक महत्वपूर्ण अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि मुखके कैंसर के विकास के संदर्भ में शराब सेवन की कोई भी सुरक्षित सीमा नहीं है। भारत में शराब का प्रतिदिन बहुत कम मात्रा में सेवन—केवल लगभग एक मानक पेय—भी मुख (बक्कल म्यूकोसा) कैंसर के जोखिम को ५०% तक बढ़ा देता है। यह जोखिम विशेष रूप से स्थानीय स्तरपर तैयार की गई शराब के साथ सबसे अधिक पाया गया। यह निष्कर्ष एक बड़े तुलनात्मक अध्ययन से सामने आया है, जो ओपन-एक्सेस जर्नल बी.एम.जे. ग्लोबल हेल्थ में ऑनलाइन प्रकाशित हुआ है।

अध्ययन में यह भी रेखांकित किया गया है कि शराब सेवन के सभी रूप—चाहे वे अंतरराष्ट्रीय ब्रांड जैसे बीयर, व्हिस्की**,** वाइन हों या भारत में स्थानीय रूप से उत्पादित शराब जैसे महुआ, ताड़ी, देसी दारू या थर्रा—सभी बक्कल कैविटी कैंसर के जोखिम को बढ़ाते हैं।

अध्ययन ने पहली बार यह पुष्टि की है कि तंबाकू चबाने और शराब पीने की संयुक्त आदतें मिलकर मुख गुहा कैंसर के जोखिम को, दोनों आदतों की अनुपस्थिति की तुलना में, चार गुना तक बढ़ा देती हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि तंबाकू के उपयोग की अवधि चाहे जितनी भी हो, शराब मुख कैंसर के जोखिम को बढ़ाने वाला एक सहायक कारक थी। संभवतः इसका कारण यह है कि एथेनॉल मुख की आंतरिक परत में वसा की मात्रा को बदल देता है, जिससे उसकी पारगम्यता बढ़ जाती है और परिणामस्वरूप वह तंबाकू चबाने वाले उत्पादों में मौजूद अन्य संभावित कैंसरकारी तत्वों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाती है। चूँकि तंबाकू का उपयोग और शराब सेवन अक्सर साथ-साथ होते हैं, इसलिए मुख गुहा कैंसर की रोकथाम के लिए तंबाकू के साथ-साथ शराब के उपयोग को नियंत्रित करना अत्यंत आवश्यक है।

संशोधक का कहना है कि ओरल कैंसर भारत में दूसरी सबसे आम बीमारी है, जिसमें हर साल लगभग १४३**,**७५९ नए मामले और ७९**,**९७९ मौतें होती हैं। इस बीमारी की दर लगातार बढ़ी है, और हर १००**,**००० भारतीय पुरुषों में लगभग १५ मामले सामने आते हैं। भारत में मुंह के कैंसर का मुख्य रूप गालों और होंठों की मुलायम गुलाबी परत (बकल म्यूकोसा) का कैंसर है। जिन लोगों पर इसका असर हुआ, उनमें से आधे से भी कम (४३%) लोग ५ या उससे ज़्यादा साल तक ज़िंदा रहते हैं।

अभी की अध्ययन में २०१० और २०२१ के बीच बकल म्यूकोसा कैंसर की पुष्टि वाले १८०३ लोगों और बीमारी से ठीक हुए १९०३ रैंडम तरीके से चुने गए लोगों (कंट्रोल) की तुलना की गई। हर पार्टिसिपेंट ने ११ इंटरनेशनल लेवल पर पहचाने गए ड्रिंक्स, जिनमें बीयर, व्हिस्की, वोडका, रम और ब्रीज़र (फ्लेवर्ड अल्कोहलिक ड्रिंक्स) शामिल हैं; और ३० स्थानिक मद्य, जिनमें महुआ, देसी दारू और ठर्रा शामिल हैं, में से उन्होंने कितनी देर, कितनी बार और किस तरह की शराब पी, इसकी जानकारी दी।

जिन लोगों ने बिल्कुल भी शराब नहीं पी, उनकी तुलना में, जो लोग पीते थे, उनमें यह जोखीम ६८% ज़्यादा था। यह देखा गया कि किसी भी तरह की अल्कोहलिक ड्रिंक्स से जोखीम बढ़ जाता है। आंतरराष्ट्रीय और स्थानिक दोनों तरह की शराब से बकल म्यूकोसा कैंसर होने का जोखीम लगभग दोगुना हो जाती है। स्थानिक जगाहो पर बनी देसी शराबों में इसका इस्तेमाल सबसे ज़्यादा जोखीम वाला था।

टाटा मेमोरियल सेंटर के निर्देशक डॉ. सुदीप गुप्ता ने ज़ोर देकर कहा कि यह अध्ययन पहली बार शराब और तंबाकू चबाने के मिले-जुले असर को दिखाती है। उन्होंने बताया कि शराब को समूह १ कैंसर कारक माना गया है और ओरल कैविटी कैंसर के अलावा यह सात दूसरी कैंसर जगहों के लिए भी ज़िम्मेदार है। उन्होंने आय.ए.आर.सी. ,डब्ल्यू. एच.ओ. के बयान को दोहराया कि **"**शराब से संबंधित सख्त नीतियां बनाना आपके द्वारा किए जाने वाले सबसे समझदारी भरे निवेशों में से एक है।**"**

ऑक्ट्रेकके निर्देशक डॉ. पंकज चतुर्वेदी ने सुझाव दिया कि अब शराब नियंत्रण नितीयोको मज़बूत करने और लागू करने का सही समय है। भारत में शराब नियंत्रण के लिए मौजूदा कानूनी ढांचा मुश्किल है और इसमें केंद्र और राज्य दोनों के कानून शामिल हैं। शराब भारतीय संविधान के सातवें अनुसूचीके तहत राज्य सूची में शामिल है, जिससे राज्यों को शराब के उत्पादन, वितरण और बिक्री को नियमित और नियंत्रित करने का अधिकार मिलता है। हालांकि, स्थानिक शराब का व्यापार नियंत्रित नहीं है, जिसमें सहभागियो द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली कुछ शराब में ९०% तक मद्यार्क होता है," उन्होंने बताया।

सेंटर फॉर कैंसर एपिडेमियोलॉजी के निर्देशक डॉ. राजेश दीक्षित ने बताया कि नतीजों से पता चलता है कि भारत में सभी बकल म्यूकोसा कैंसर के १० में से १ से ज़्यादा मामले (लगभग ११.५%) शराब की वजह से होते हैं, जो अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, असम, तेलंगाना और मध्य प्रदेश जैसे कुछ राज्यों में बढ़कर १५% से ज़्यादा हो जाता है, जहाँ यह बीमारी ज़्यादा फैली हुई है। गुजरात जैसे राज्यों में, जहाँ शराब की बिक्री पर रोख है, शराब से जुड़े ओरल कैंसर का जोखीम बहुत कम है।

मिस ग्रेस जॉर्ज ने बताया कि आंतरराष्ट्रीय और स्थानिक दोनों तरह की शराब ओरल कैविटी कैंसर के जोखीम को लगभग दोगुना कर देती है।

डॉ. शरयू म्हात्रे, साइंटिफिक ऑफिसर और अध्ययन के लीड सीनियर लेखक ने कहा कि हमारी अध्ययन से पता चलता है कि बकल म्यूकोसा कैंसर के जोखीम के लिए शराब पीने की कोई सेफ लिमिट नहीं है। हमारे नतीजों से पता चलता है कि रोकथाम के लिए पब्लिक हेल्थ एक्शन ज़रूरी है। शराब और तंबाकू के इस्तेमाल से भारत से बुक्कल म्यूकोसा कैंसर काफी हद तक खत्म हो सकता है।

यह ध्यान रखना ज़रूरी है कि ओरल कैंसर पर हुई मौजूदा अध्ययन और आई. ए. आर. सी. प्रबंध से पता चलता है कि वैज्ञानिक सबूत साफ़ हैं कि थोड़ी मात्रा में भी नियमित शराब का इस्तेमाल कैंसर होने के लिए ज़िम्मेदार है। इसलिए, शराब नियंत्रण नितीयोसे जानें बचेंगी, पैसे बचेंगे, जल्दी असर होगा, और कई कैंसर वाली जगहों और दूसरी पुरानी बीमारियों को रोकने में मदद मिलेगी।

अक्सर पूछे जाने वाले सवाल

प्र. १: भारत में ओरल कैविटी कैंसर का बोझ कितना है?

ओरल कैविटी कैंसर भारत में एक बड़ा सार्वजनिक स्वास्थ्य मुद्दा है। दुनिया भर में होने वाले ओरल कैंसर के लगभग एक-तिहाई मामले देश में होते हैं, जिससे यह दुनिया भर में सबसे ज़्यादा बोझ वाले देशों में से एक बन गया है। यह भारत में पुरुषों में होने वाले प्रमुख तीन कैंसर में से एक है और महिलाओं में भी आम है। चबानेवले तंबाकू और सुपारी का ज़्यादा इस्तेमाल इस बोझ में काफी योगदान देता है। हर साल, भारत में ओरल कैविटी कैंसर के लगभग १४१,३४२ नए मामलों का पता चलता है। कई भारतीय राज्यों में ओरल कैंसर की उम्र के हिसाब से दर हर १००,००० लोगों पर २५ से ३३ के बीच होती है। दुर्भाग्य से, ओरल कैंसर का पता अक्सर उन्नत अवस्थामें चलता है, जिससे मृत्यु दर ज़्यादा होती है और इलाज में काफी मुश्किलें आती हैं।

प्र. २: ओरल कैंसर के मुख्य जोखीम कारक क्या हैं?

मुख्य जोखीम कार में शामिल हैं:

- तंबाकू का इस्तेमाल (धुम्रपान और चबानेवले प्रकार जैसे गुटखा, खैनी, ज़र्दा, और तंबाकू के साथ पान)
- शराब पीना
- सुपारी चबाना, तंबाकू के बिना भी
- मुंह की खराब सफाई।
- इन कारकोके लंबे समय तक संपर्क में रहने से जोखीम काफी बढ़ जाता है।
- अनुवांशिक संवेदनशीलता।

प्र. ३: क्या स्थानिक स्तर पर बनी देसी शराब से ओरल कैविटी कैंसर का जोखीम बढ़ता है?

हाँ, मौजूदा अध्ययन से पता चलता है कि स्थानिक मद्य से भी जोखीम बढ़ता है।

प्र. ४: क्या आंतरराष्ट्रीय स्तरपर पर मान्यता प्राप्त शराब से ओरल कैविटी कैंसर का जोखीम बढ़ता है?

हाँ, मौजूदा अध्ययन से पता चलता है कि आंतरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त के मद्य से भी जोखीम बढ़ता है।

प्र. ५: केस-कंट्रोल अध्ययन क्या है?

केस-कंट्रोल अध्ययन एक तरह का संशोधन रचना है जिसका इस्तेमाल यह पता लगाने के लिए किया जाता है कि किसी खास बीमारी या नतीजे से कौन से कारक जुड़े हो सकते हैं। इस तरीके में, जिन लोगों को पहले से यह बीमारी है (केस) उनके एक समूह की तुलना दूसरे समूह से की जाती है जिन्हें यह बीमारी नहीं है (कंट्रोल)। फिर संशोधक समय को पीछे देखते हैं कि दोनों समुहोके बीच क्या जोखीम या अंतर थे। इससे उस खास बीमारी के संभावित कारणों या जोखीम कारक की पहचान करने में मदद मिलती है।